

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

प्रसन्नता विज्ञान

प्रसन्नता और स्वास्थ्य के मध्य इतना गहरा संबंध है कि १०० से १,००० वर्ष ईसा पूर्व दी गयी स्वास्थ्य की परिभाषा में ही आत्मा, इंद्रियों और मन को प्रसन्नता को समाहित किया गया है (सु.सु., १५.४१): समदोषः समांगिश्च समधातु मलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थइत्थिधीयते॥ जिस व्यक्ति के दोष, अनि, धातु, और मल-त्याग सन्तुलित हों, इंद्रियाँ, आत्मा व मन प्रसन्न हों, वही स्वस्थ कहलाता है। आयुर्वेद की परिभाषा में भी प्रसन्नता का प्रमुख स्थान है। जीवन में हितकारी, अहितकारी, सुखकारी, दुःखकारी, और उनके मानदण्डों को दर्शित करने वाला विज्ञान ही आयुर्वेद है (च.सु. १.४१): हितार्हितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हितार्हिम्मा। मानं च तच्च यनोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥ सुख व दुःख को भी स्वास्थ्य पर केंद्रित कर परिभाषित किया गया है (च.सु.१.४): विकारो धातुवैयर्थ्यं साम्यं प्रकृतिरूप्यतो सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दुःखमेव च॥ धातुओं में विषमता विकार है और संतुलन ही प्रकृति है। आरोग्य का नाम सुख है और विकार दुःख है। वस्तुतः मन को प्रसन्नता आरोग्य का सर्वश्रेष्ठ सूचक है (च.सु.२५.४०): अनिवेदो वर्ततलक्षणांनं श्रेष्ठम्।

प्रसन्नता क्या है? यह विलेपण प्रसन्नता में सुख, हर्ष और नन्दन को शामिल मानता है, पर मोक्ष से प्राप्त आनंद शामिल नहीं है। वस्तुतः यह जन-सामान्य के मध्य प्रसन्नता बढ़ाने की रणनीति या युक्ति पर प्रमाण-आधारित विलेपण है। श्री वामन शिवराम आटे के संस्कृत-हिंदी कोश के अनुसार सुख का तात्पर्य आनंद, हर्षपूर्ण, प्रसन्नता, खुशी, अनुकूलता आदि है। हर्ष से तात्पर्य आनंद, खुशी, प्रसन्नता, संतोष, एक सुखालमक भाव, उल्लास, आह्लाद आदि है। नन्दन से तात्पर्य खुश करने वाला, प्रसन्न करने वाला, सुहावना आदि है।

प्रसन्नता कैसे प्राप्त की जाये? हम प्रसन्न कैसे रह सकते हैं? कौन से कारक हैं जो हमें प्रसन्नता देते हैं? इस प्रश्न का उत्तर प्राचीन आयुर्वेद संहिताओं के साथ-साथ समकालीन वैज्ञानिकों द्वारा इस विषय में अब तक प्रकाशित ५४,११२ शोधपत्रों में देखना होगा। यह कार्य तो एक पुस्तक लिखने से भी नहीं पूरा होगा पर प्रसन्नता पर जिनिकल जेनयुस की मेटा-एनालिसिस और सिस्टेमेटिक-रेव्यूज के साथ साथ आयुर्वेद की संहिताओं से हम खुश रहने का रास्ता खोज सकते हैं। इसी प्रकार प्रसन्नता प्राप्त करने के सन्दर्भ में लगभग २०० से अधिक सन्दर्भ आयुर्वेद की संहिताओं में सीधे-सीधे प्राप्त होते हैं। उनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण,उपयोगी और प्रमाण-आधारित चार रणनीतियां यहीं वर्णित हैं।

१.तत्त्वावबोधः (शिक्षा, कौशल और नवाचार) – यथार्थ-ज्ञान, सच्चाई का बोध या उच्च-शिक्षा प्रसन्नता का मूल कारक है (च.सु.३०.१५): तत्त्वावबोधैर्षणानांउत्कृष्टमम् – मन को प्रसन्न करने वाले कारकों में तत्वज्ञान या सच्चाई का ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है। समग्र दुःख (शरीर और मन के रोग) अविज्ञान (मूर्खता) के अन्वीन है। समग्र सुख विज्ञान ज्ञान में प्रतिष्ठित है (च.सु.३०.८४): समग्रं दुःखामयमविज्ञाने द्रव्यश्रमम्। सुखं समग्रं विज्ञाने विप्लवे च प्रतिष्ठितम्॥ असल में उत्तम शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वाध्याय द्वारा निरंतर दोस ज्ञान प्राप्त किये बिना प्रसन्नता देने में सहायक अन्य किसी एगनीति का क्रियावन्धन संभव नहीं है। उदाहरण के लिये यथार्थ-बोध के बिना प्रसन्नता देने वाली अन्य रणनीतियां जैसे आत्म-निर्गंण, नियत कर्तव्यों का पालन और सुखायु या हितायु आदि क्रियावन्धन संभव नहीं है। आत्म-चिंतन हेतु स्वयं को समय देना, मनोरम स्थलों की यात्रा करना, उपयोगी जानकारी जुटाना आदि प्रसन्नता देते हैं। समकालीन शोध में वर्ष १९३० से २०२० के मध्य शिक्षा और प्रसन्नता के रिस्तों १८२ शोधपत्र विषय की प्रमुख शोध जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं (देखें, इकोनोमिक्स ऑफ़ एजुकेशन रिव्यू, १७:२४५–२५६, १९९८; एनाइड साइकोलॉजी, ६८:१५०–१७६, २०१९)।

२. इंद्रियबन्धः (आत्म-नियंत्रण) – आयुर्वेद के अनुसार प्रसन्नता देने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक इंद्रियबन्ध है (च.सु.३०.१५): इंद्रियबन्धो नन्दनानांउत्कृष्टतमम् – प्रसन्नता देने वाले कारकों में इंद्रियों पर नियंत्रण करना सर्वोत्कृष्ट है। असल में आत्म-नियंत्रण के बिना प्रसन्नता देने में सहायक अन्य रणनीतियाँ, जैसे नियत कर्तव्यों का पालन और सुखायु या हितायु का क्रियावन्धन संभव नहीं है। विषय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जर्नल्स में १९७८ से २०२० के बीच प्रकाशित ८१ शोधपत्र भी यहीं सिद्ध करते हैं कि प्रसन्नता देने वाले कारकों में आत्म-नियंत्रण (सेफ़-कंट्रोल) सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है (उदाहरण के लिये देखें, फ़्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, १०, आर्ट.७०६, २०१९)।

३. धर्माः क्रियाः (कर्तव्य-पालन) – प्रसन्नता देने वाला तीसरा महत्वपूर्ण कारक नियत कर्तव्यों का पालन करना है (च.श्रा.२.४१): धर्माः क्रिया इहर्निमित्तमुभूताः – कार्यसंगत, काजनी रूप से वैध या नियत कर्तव्यों के पालन को हर्ष का निमित्त कहा गया है। व्यक्ति के स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, परिवार में विभिन्न रिस्तों के प्रति और समाज और देश के प्रति कुछ कर्तव्य निर्धारित होते हैं। इन सक्ता यथार्थ-बोध होना, और तदनुसार आत्म-निर्गन्धत रहकर भली-भांति निभाए प्रसन्नता देता है। व्यक्ति का अपने शरीर को स्वस्थ और प्राणवान रखने हेतु निहित कर्तव्यों का निर्वाह प्रसन्नता देता है। परिवार में पत्नी, प्रति, पिता, माता, भाई, भवन्, पुत्र, पुत्री होने और कार्य में कर्मचारी-अधिकारी या स्वयं अधिकारी होने के कर्तव्य का पालन और सम्यक निर्वहण प्रसन्नता देता है। इसी प्रकार समाज के प्रति कर्तव्य निर्वह में सामाजिक सदुतों का पालन प्रसन्नता देता है। कर्तव्य-विमुख व्यक्ति प्रसन्न नहीं रह सकता। विषय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जर्नल्स में १९९८ से २०२० के बीच प्रकाशित ८० शोधपत्र भी यहीं सिद्ध करते हैं कि प्रसन्नता देने वाले कारकों में दूसरों के प्रति सद्भावनापूर्ण कर्तव्य निर्वहन, उन्हे सम्य दान, उनकी मदद में धन खर्च करना और समाजोपयोगी कार्य करना जिसे शोध में प्रोसोशियालिटी शब्द द्वारा स्पष्ट किया गया है, प्रसन्नता देने वाला महत्वपूर्ण कारक है। दीर्घकालीन खुशी सिर्फ विषय के साथ सार्थक संबंध में निहित है। यहाँ सार्थक का मतलब स्वार्थ नहीं है (उदाहरण के लिये देखें, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एल्वायमिटेडरिस्स एंड पॉलिक हेल्थ, १७: १–१२, २०२०; साइंस, ३१९:१६८७–१६८८, २००८; जर्नल ऑफ़ हैपीनेस स्टडीज, १३:३४७–३५५, २०१२; कंटेंट डायरेक्शनस इन साइकोलॉजिकल साइंस, २३:४१–४७, २०१४)। इस रणनीति में बड़िया शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य, योगों का कल्याण, लचीलापन, जीवन का सकारा उद्देश्य, जीवन में स्वास्थ्य संबंधी गुणवत्ता और सामाजिक भागीदारी जैसे कारक समाहित हो जाते हैं जिन्हें शोध में प्रसन्नता के लिये उपयोगी पाया गया है।

४.सुखमायुः हितमायुः (सुखकारी और हितकारी जीवन)– प्रसन्नता देने वाला चौथा कारक सुखायु-हितायु का एक साथ पाया जाना है। स्वयं के लिये सुखकारी और समाज के लिये हितकारी जीवन जीने की साझा युक्ति ही प्रसन्नता देती है। सुखी और हितकारी जीवन के लक्षणों में प्रसन्नता देने वाले कारक भी निहित हैं (च.सु.३०.२४): तत्र शारेरमानसाभ्यं रोगाध्यामनभित्तस्य

सारांश में कहें तो बढ़िया शिक्षा, कौशल और नवाचार, आत्म-नियंत्रण, और कर्तव्यों का निर्वहन आनंददायी है। उत्तम जीवनशैली द्वारा स्वास्थ्य और सामर्थ्य बेहतर कर सुखायु प्राप्त कीजिये और उसका समाज के हितार्थ प्रयोग कर हितायु प्राप्त कीजिये। दीर्घकालिक प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रमाण-आधारित रास्ता यही है।

विषयवेत्ता। शारीरिक और मानसिक रोगों से पूरी तरह मुक्त, विशेष रूप से युवावस्था, हर कार्य करने का सामर्थ्य और उसके अनुरूप बल, वीर्य, यश, पाक़रम्, ज्ञान, कौशल, इंद्रियों और इंद्रियों के विषयों के बल के समुदाय से युक्त, उत्तम धन-सम्पदा एवं विविध प्रकार के उपभोग में समग्र, जो कार्य प्रारम्भ किये चे सभी कार्य पूर्ण हो गये हों और स्वयं की इच्छा अनुसार चलते-फ़िरते वाले व्यक्ति का जीवन सुखी जीवन होता है। इसके उलट दुःखी जीवन होता है। समकालीन शोध के अनुसार भी बड़िया स्वास्थ्य, उत्तम शारीरिक-मानसिक सामर्थ्य, निर्बमित व्यायाम, प्राकृतिक स्थलों और बाग़-बगीचों में भ्रमण-फ़िरना, उत्तम मित्रों और परिवार के साथ समय बिताना, शिक्षा, कौशल, धन-संपत्ति अर्बित करना, कार्यों में सफलता तथा इच्छा अनुसार ओग़-बाने के लिये समय, सामर्थ्य और स्वतंत्रता बड़ी प्रसन्नता देते हैं। (देखें, प्रोसोडियस ऑफ़ दनेशनल अकेडमी ऑफ़ साइंसेज ऑफ़ एग्निएर, १००:१११७६–१११८३, २००३; १०७:२२४६३–२२४६८, २०१०; ११४:८५२३–८५२३७, २०१७; ११६:१२०७–१२१२, २०१९; ११७:६४६३–६४६८, २०२०)।

अपना कल्याण सुनिश्चित करते हुये, सभी प्राणियों के हितचिंतक, दूसरे का धन छीनने से बचने वाले, सत्य बोलने वाले, शांतिप्रेम, कार्यों को सोच विचार कर करने वाले, साधनाधन, अर्थ, धर्म, काम का सम्यक सेवन करने वाले, श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाले, ज्ञानशील, विज्ञानशील, शांतिशील, बड़े-बूढ़ों को सेवा करने वाले, राग, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों पर उच्चकोटि का नियंत्रण रखने वाले, निरंतर दमशील, नित्य आत्म-निर्यंत्रित, ज्ञान, शांति, विनम्रता, आध्यात्म के जानकारी और प्रयोग में लेने वाले, लोक-परलोक का विचार करने वाले, स्मरण-शक्ति और बुद्धि से युक्त व्यक्ति की आयु हितायु के लयी जाती है। समकालीन शोध में प्रोसोशियालिटी के विविध आयाम यही हैं। सुखायु स्वयं के लिये है और हितायु समाज के लिये है। शोध में भी यही स्थिति स्पष्ट होती है (उदाहरण के लिये देखें, एग्नअल रिव्यू ऑफ़ पॉलिक हेल्थ, ४०:३३९–३५९, २०१९)।

आयुर्वेद उत्तम मित्रों का साथ करने को सलाह देता है तथा यह चेतावनी देता है कि अकेले खुश मत होइये, हितायु का ध्यान रखते हुये प्रसन्नता साक्षा कीजिये (च.सु.८.२६) नैकः सुखी। अकेले सुखी न हों, चुप को समाज के साथ बाँटिये। दीर्घकालिक अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि हमारी खुशी उन सबकी खुशी पर निर्भर करते हैं जिनके साथ हम जुड़े हुये हैं (देखें, ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, ३३८:२३–२६, २००९)।

हार्वर्डस्टडी ऑफ़ एडल्ट देवलपमेंट वर्ष १९३८ में ७२४ प्रतिभागियों के साथ शुरू हुई थी। इसमें हार्वर्ड कॉलेज में २६८ स्नातक छात्र और ४५६ १४-वर्षीय बच्चेके, जो बोस्टन, मैसाचुसेट्स के कुछ सबसे वंचित इलाकों में पले-बढ़े थे। यह अध्ययन अभी भी चल रहा है। अभी तक के निष्कर्ष बताते हैं कि अन्य लोगों के साथ मधुर और गर्मजोशी के संबंध यह तय करते हैं कि आप किसी समय तक स्वस्थ रहेंगे और आपका दिमाग कब तक तेज रहेगा। दुनिया में सबसे लंबे समय तक प्रसन्नता पर चलने वाले अध्ययन का यही निष्कर्ष है। मधुर और गर्मजोशी वाले रिस्तों का तात्पर्य ऐसे रिस्ते से है जो सहायक महसूस कराता है। इसका मतलब भावनात्मक समर्थन, सहाय, वित्तीय सहायता व तार्किक समर्थन हो सकता है। ऐसा सभी रिस्ते सहायक कहे जा सकते हैं जो उन रिस्तों के विपरित हैं जो आपको निजोड देते हैं, कटु होते हैं, या शोषणकारी होते हैं।

वर्ल्ड हैपीनेस रिपोर्ट २०१८ छह प्रमुख कारकों की पहचान करती है जो समग्र कल्याण में योगदान करते हैं: आय, स्वास्थ्य जीवन प्रत्याशा, सामाजिक समर्थन, स्वतंत्रता, विद्याास और उदारता। इन चारों को संस्कृतियों और भौगोलिक क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला में खुशी और जीवन संतुष्टि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए दिखाया गया है। इन कारकों पर ध्यान केंद्रित करके, व्यक्ति और नीति निर्माता अधिक सहायक वातावरण बनाने के लिए काम कर सकते हैं जो कल्याण को बढ़ावा देता है और सभी के लिए सकारात्मक परिणामों को बढ़ावा देता है।

सुखायु और हितायु तभी प्राप्त हो सकते हैं जब आप समर्थ हैं, अन्यथा जीवन डर-डर कर कटता है (च.सु.२५.४०): असमर्थता भयकराणांश्रेष्ठम्-भय उत्पन्न करने वाले कारकों में असमर्थता सबसे भारी है। आजीविका को समग्र रूप से सुदृढ़ करने के लिये वित्तीय पूँजी (धनेपण, धन-संपत्ति, सोना-चांदी आदि), धौतिक पूँजी (धनेपण, मकान, वाहन आदि), प्राकृतिक पूँजी (धनेपण, खेत-ख़िलान, जल, जमीन, बाग़-बगीचे आदि), सामाजिक पूँजी (सामाजिकसद्गुत, आपसी रिस्ते, मेतजोल की प्रगाढता, मित्रता आदि), मानव पूँजी (प्राणपण, शिक्षा, ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य आदि), और आध्यात्मिक पूँजी (परलोकप्रेषणा, सद्गुत, आचार रसायन) को बढ़ाते रहने का निरंतर प्रयत्न आवश्यक है। इससे सामर्थ्य में बढ़ोतरी, असमर्थता में कमी और परिणामस्वरूप भय नष्ट होगा। भय को नष्ट करना मानसिक रोगों का सबसे बड़ा निदान-परिवर्जन है। भय में कगो आते ही आनंद में वृद्धि होने लगती है। शर्त यह है कि आजीविका सुदृढ़ करने में ऐसे साधनों का सहारा लेना चाहिये जो नियत कर्तव्यों के विपरित नहीं हैं। साथ ही शांति और अध्ययन के लिये समर्पित होना चाहिये। इस प्रकार रहने से व्यक्ति को सुख की प्राप्ति होती है (च.सु.५.१०४): वृत्तुपायाविषेवेत येयुध्मार्गान्निरोधिनः। शममयनं चैव सुखमेव समस्तयुतः॥

यूटिमोनिया (सदाचार, कल्याण, प्रामाणिकता, उत्कृष्टता, सद्भावना, विकास) को आयुर्वेद की हितायु के समीप माना जा सकता है। हेडोनिा (व्यक्तिगत आराम, यश, ख्याति, सुख, भोग, सम्पत्तियों की अनुपस्थिति) को आयुर्वेद की सुखायु के समीप माना जा सकता है। ग्रीक दर्शन में यूटिमोनिया सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवीय गुण है, या कहें कि प्लेबल कॉमन गुड है जो किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि अपने आप में वांछनीय है। आयुर्वेद का मानना है कि सुखायु और हितायु दोनों का एक साथ होना सुखी जीवन के लिये आवश्यक है। शोधकर्ताओं का भी मानना है कि यूटिमोनिया और हेडोनिा दोनों ही अवधारणायें प्रसन्नता को भलीभांति समझने के लिये आवश्यक हैं (देखें, चकसंतिता, सूर्यस्थान, अग्रघ्य ३०, पृष्ठ २४:साथ ही देखें, जर्नल ऑफ़ हैपीनेस स्टडीज, १५:१४२५–१४५६, २०१४; जर्नल ऑफ़ पर्सनलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, ६४:६८८–६९१, १९९३)। भारतीय और ग्रीक दर्शन में इस विषय में समानता दृष्टिगोचर होती है।

हमने यहाँ स्पष्ट किया है कि प्रसन्नता अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु, बेहतर सामाजिक संबंधों, बेहतर कार्य प्रदर्शन,उच्च शिक्षा और रचनात्मकता पर निर्भर करती है। प्रसन्नता अनुसंधान का एक अत्यंत सक्रिय क्षेत्र है। पिछले २०वर्षों में विषय पर प्रकाशित लगभग २,००,००० से अधिक शोधपत्र और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। यह चर्चा जारी रहेगी क्योंकि ज्ञान व अज्ञान ही हमारा मार्ग या कुमार्ग तय करते हैं (च.सु.२८.३५): सर्वप्रभुतां मताः सर्वतः प्रवृत्तयः। ज्ञानाज्ञानविशेषाणु मार्गाणामप्रवृत्तयः॥ सभी जीवित प्राणी सुख प्राप्त करने के लक्ष्य को पाने के लिये प्रयासरत रहते हैं, परन्तु वे अपनी जागरूकता या अज्ञानता के आधार पर सही या गलत मार्ग का अनुसरण करते हैं। अपने सुख दुःख के लिये हम स्वयं उत्तरदायी हैं(च.नि.७.२२): आत्मानमेव मन्येत कर्तांर सुखदुःखयोः। तस्माच्छैयस्करां मार्गं प्रविशेत्तत न जेसाम्॥ अपने सुख-दुःख के लियेस्वयं को जिम्मेदार मानना चाहिये। इसलिये व्यक्ति को निश्चित होकर कल्याणकारी मार्ग पर चलना चाहिये। सारांश में कहें तो बढ़िया शिक्षा, कौशल और नवाचार, आत्म-नियंत्रण, और कर्तव्यों का निर्वहन आनंददायी है। उत्तम जीवनशैली द्वारा स्वास्थ्य और सामर्थ्य बेहतर कर सुखायु प्राप्त कीजिये और उसका समाज के हितार्थ प्रयोग कर हितायु प्राप्त कीजिये। दीर्घकालिक प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रमाण-आधारित रास्ता यही है।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

जालोर/ माउंट आबू, (निसं)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने शनिवार को राजभवन में कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की ओर से अनुसूचित जनजाति उप परियोजना के अंतर्गत माउंट आबू क्षेत्र के आदिवासी किसानों को मिनी दाल मिल, उन्नत कुक्कुट नस्ल एवं स्टील बीज भंडारण टंकियों का वितरण किया। राज्यपाल मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि जल, जंगल और जमीन को बचाने के साथ-साथ देश की संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण में आदिवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि जनजाति क्षेत्र के लोगों को स्वावलंबी एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर मुख्यधारा में लाने के लिए सतत प्रयास जरूरी है।

राज्यपाल ने आबूरोड़, पिंडवाडा एवं पाली में चर्यनित किसानों के सशक्तीकरण के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की परियोजना के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा किा जा रहे कार्यों की सराहना भी की। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

राज्यपाल ने आबूरोड़, पिंडवाडा एवं पाली में चर्यनित किसानों के सशक्तीकरण के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की परियोजना के अंतर्गत कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा किा जा रहे कार्यों की सराहना भी की। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर



माउंट आबू के राजभवन में राज्यपाल कलराज मिश्र ने आदिवासी किसानों को मिनी दाल मिल, उन्नत कुक्कुट नस्ल एवं स्टील बीज भंडारण टंकियों का वितरण किया।

के कुलपति प्रो. बी.आर. चौधरी ने लाभार्थियों का चयन कर कृषि एवं पशुपालन से संबंधित तकनीकियों का कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा

परिजनों ने अस्पताल के बाहर पेड़ के नीचे महिला का प्रसव कराया

करोली, (निसं)। मासलपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर शनिवार को अस्पताल कार्मिकों की लापरवाही एवं मरमाना का मामला सामने आया है जहां एक प्रसूता का अस्पताल में प्रसव ना करने से अस्पताल के बाहर भीषण गर्मी में परिवार जनों को पेड़ के नीचे प्रसव करना पड़ा।

मामला केराणा गांव निवासी दलित मजदूर परिवार के बरगी समाज की प्रसूता काली पत्नी साहब सिंह का है जिसके परिवारजन प्रसव के लिए मासलपुर अस्पताल लेकर गए लेकिन कार्मिकों ने उन्हें भ्रष्टाचार के चलते प्रसव नहीं कराया। प्रसूता महिला के परिवार जन ने चिकित्सा कार्मिकों पर आरोप लगाया है कि अस्पताल में कार्मिकों ने प्रसूता का प्रसव करने की बजाये धक्का देकर अस्पताल परिसर से बाहर करते हुए करोली अस्पताल के लिए रेफर कर दिया प्रसूता के परिजन महिला को प्रसव के लिए करोली लाने की तैयारी कर रहे थे। मगर प्रसव पीड़ा से पीड़ित को परिवार जन भीषण गर्मी के बीच एक पेड़ के नीचे ले गई जहां उन्हें प्रसव कराना पड़ा जहां प्रसूता ने बालिका को जन्म दिया उसके करीब १ घंटे बाद अस्पताल कार्मिकों द्वारा प्रसूता नवजात बालिका को अस्पताल में भर्ती किया गया। अस्पताल के चिकित्सक डॉ. विजय सिंह मीणा का कहना है कि

रक्त की कमी के कारण प्रसूता को करोली रेफर किया गया और प्रसूता के परिवार जनो का आरोप है उसकी जांच कि जायेगी दौषी पाये गये कार्मिकों के खिलाफ कार्यवाही करेंगे मामले की जानकारी मिलने पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश चंद मीणा मासलपुर अस्पताला पहुंचे जहां कार्मिकों की लापरवाही मानते हुए एएनएम को एपीओ किया गया है।

प्रसूता महिला के परिवार जन ने मासलपुर स्वास्थ्य केन्द्र कि एएनएम पर बदसलुकी करने और प्रसव कराने कि एवज में राशि मांगने के आरोप लगाये हैं जिस पूरे मामले के सोशल मीडिया पर वीडियो भी वायरल हो रही है। जिन्हें देखकर लोग स्वास्थ्य विभाग के कार्मिकों के खिलाफ तरह-तरह के पोस्ट डाल रहे हैं।

राजगढ़, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के भाकरी में रामअवतार मीना को मौत के बाद गरीब परिवार की मदद के लिए सर्व

समाज हेल्प टीम ने अभियान चलाकर दो लाख १५ हजार की सहायता राशि परिवार को प्रदान की। सर्व समाज हेल्प टीम के सदस्य सुनिल भाकरी व संयोजक प्रकाश भाबला दुब्वी ने बताया कि रामअवतार बहुत ही गरीब परिवार से था जिसकी ३० मई को मृत्यु हो गई थी। इनकी गरीब स्थिति देखते हुए स्थानीय ग्राम वासियों ने आर्थिक सहायता के लिए एक मिशन रामअवतार भाकरी चलाया जिसमें लगभग ७५० सहयोग कर्ताओं के सहयोग करने के बाद २१५००० रुपए (दो लाख पन्द्रह हजार) की राशि एकत्रित हुई जिसको १० जून को सक्रिय सदस्यों ने व स्थानीय ग्रामीणों ने रामअवतार की यादगार में बालाजी नर्सरी कोटीनारायणपूर के द्वारा भेंट किया। वही

उपखण्ड अधिकारी मीणा ने कहा कि शिक्षा के लिए भूमि दान देने वाले भामाशाहों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी काम है, भामाशाह

गोदारा से प्रेरणा लेकर प्रत्येक सक्षम व्यक्ति को सार्वजनिक संस्थानों के लिए इस प्रकार के प्रेरणाप्रद कार्य करने चाहिए। इस अवसर पर विकास अधिकारी अभिषेक मीणा, नायक तहसीलदार सुभाष चन्द झोंपा, अति. विकास अधिकारी हंसराज मीणा सहित ठाम के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

उपखण्ड अधिकारी मीणा ने कहा कि शिक्षा के लिए भूमि दान देने वाले भामाशाहों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी काम है, भामाशाह गोदारा से प्रेरणा लेकर प्रत्येक सक्षम व्यक्ति को सार्वजनिक संस्थानों के लिए इस प्रकार के प्रेरणाप्रद कार्य करने चाहिए। इस अवसर पर विकास अधिकारी अभिषेक मीणा, नायक तहसीलदार सुभाष चन्द झोंपा, अति. विकास अधिकारी हंसराज मीणा सहित ठाम के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मिटर लम्बाई की भूमि रास्ता हेतु दान कर दी। जिस पर शिविर प्रभारी ने निर्देशानुसार तहसीलदार बीदासर द्वारका प्रसाद शर्मा ने पटवारी व भू अभिलेख निरीक्षक को आदेश देकर दस्तावेज तैयार कर नामान्तरण आदेश किया। शिविर में उपखण्ड अधिकारी

रमेश कुमार ने दानदाता का साफा वा माला पहनाकर स्वागत किया और उन्हें भूमि दान देने के लिए धन्यवाद दिया।

मिटर लम्बाई की भूमि रास्ता हेतु दान कर दी। जिस पर शिविर प्रभारी ने निर्देशानुसार तहसीलदार बीदासर द्वारका प्रसाद शर्मा ने पटवारी व भू

पारिवारिक कार्यों के कारण भागदेई रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

कर्क धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ

चन्द्रमा अष्टम